Date
[redacted]
10.02.2021
10.02.2022

B.A (Hons) part I
Subject - HISTORY
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
S.R.A.P college. chakiya.

चोल स्थापत्य का विकास

पल्लव कला का आगे का विकास चोल-कला के रूप में देखने को मिलता है चोल काल में मुख्यतः इमारती मंदिर (स्वतंत्र मंदिर) भी बनाए गए। इस काल में भव्य मंदिरों में —

→ तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर तथा
→ गंगैकोण्ड-चोल पुरम का राजराजेश्वर मंदिर महत्वपूर्ण है।

इन मंदिरों में ऊँचे शिखर का निर्माण हुआ। विमान, शिखर और मंडप इन मंदिरों की विशेषताएँ हैं। शिखरें नीचे से ऊपर जाते हुए कई खण्डों में विभाजित हो जाता है। इसे पिरामिडनुमा शिखर कहते हैं। उसके ऊपर स्तूपिका रखी जाती थी। चोलशासकों ने अपने भव्य मंदिरों के माध्यम से अपने राजकीय गौरव को स्पष्ट किया। स्तम्भों पर टिका हुआ हॉल मण्डप कहलाता था तथा चोल मंदिरों में अनेक मण्डपों का निर्माण कराया गया। मंदिरों में गर्भ गृह के ऊपर जो उठानी होती है, जो स्तूपिका की ओर चली जाती थी उसे विमान कहा जाता था।

चोल कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता है — गोपुरम का विकास। गोपुरम अलंकृत प्रवेश द्वार को कहा जाता था अर्थात जब मंदिर का क्षैतिज विस्तार होने लगा तो फिर उसका प्रवेशद्वार छोटा पड़ने लगा अतः उसके प्रवेश-द्वार को अब ऊँचा उठाया गया। कि इस प्रवेश द्वार को अलंकृत बनाया जाने लगा। आगे एक ऐसा समय आया जब प्रवेश द्वार का आकार शिखर से भी ऊँचा हो गया तथा वह शिखर से भी अधिक अलंकृत हो गया।

Date
[redacted]
10.02.2022

B.A (Hons) part III
Subject - HISTORY
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of HISTORY
S.R.A.P College, Chakiya
Date - [redacted] 10.02.2022

सल्तनत कालीन स्थापत्य

भारत में स्थापत्य की प्राचीन शैली (शहतीरी शैली) प्रचलित थी। इस शैली की विशेषता होती थी स्थापत्य में स्तम्भ एवं शहतीर का प्रयोग। वही दूसरी तरफ भारत में तुर्की लोग मेहराबी शैली (अरकुएट शैली) लेकर आए थे अरकुएट शैली के अंतर्गत मेहराब एवं गुंबद का उपयोग होता है। यह शैली बिजेन्टियायी शैली से ली गई थी। चूंकि इस प्रकार के स्थापत्य में स्तम्भो का प्रयोग नहीं होता है इसलिए मजबूती देने के लिए गार (Mortar) के रूप में चूना तथा जिप्सम का प्रयोग आरंभ हो गया।

आरंभिक स्थापत्य

जब भारत में तुर्कों का आगमन हुआ तो आरंभ में उनके पास नए प्रकार के स्थापत्य का वक्त नहीं था इसलिए उन्होंने भारत में प्रचलित स्थापत्यों को ही मुस्लिम स्थापत्य के रूप में ढाल लिया। उदाहरण के लिए - कुतुबुद्दीन ऐबक ने - दिल्ली में कुव्वातुल इस्लाम मस्जिद, अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा का निर्माण किया।

इल्बरी वंश के स्थापत्य

किन्तु भारत मे स्थापित होने के पश्चात उन्होंने स्वतंत्र रूप में स्थापत्यों का निर्माण आरंभ किया चूंकि उन्होंने इस्लामी स्थापत्य के निर्माण के लिए भारतीय स्थापत्यकारों को लगाया था। अतः भारतीय स्थापत्य की शैली से मुस्लिम

स्थापत्य का प्रभावित होना बहुत ही स्वाभाविक था। फिर आगे विभिन्न वंशो के अधीन मेहराबी शैली तथा शहतीरी शैली के बीच क्रमिक सामंजस्य होता रहा तथा फिर इस सामंजस्य के परिणामस्वरूप एक स्वतंत्र भारतीय शैली का विकास हुआ।

इल्बरी वंश के अधीन इल्तुतमिश के द्वारा स्थापत्य का निर्माण आरंभ किया गया। उसके द्वारा स्थापित के लिए उसने कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा स्थापित कुतुब मीनार के कार्य को पूरा कराया फिर उसने अपने बेटे राजकुमार मुहम्मद की स्मृति में सुल्तान-ए-गारी का निर्माण कराया। आगे बलबन का मकबरा को एक महत्वपूर्ण स्थापत्य का दर्जा दिया जाता है तथा यह बताया गया है कि पहली बार इसी स्थापत्य में वैज्ञानिक प्रकार के गुम्बद का विकास हुआ। किन्तु नवीन शोधों से यह स्थापित होता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा प्रथम वैज्ञानिक प्रकार के मेहराब तथा गुम्बद का उदाहरण है।

• चित्र